श्रीहित मंगल विलास

श्रीहित मंगल गान

जै जै श्रीहरिवंश व्यास कुल मण्डना।

रसिक अनन्यनि मुख्य गुरू जन भय खण्डना।।

श्रीवृन्दावन वास रास रस भूमि जहाँ ।

क्रीड़त श्यामा-श्याम पुलिन मंजुल तहाँ ।।

पुलिन मंजुल परम पावन, त्रिविधि तहँ मारूत बहै।

कुंज भवन विचित्र शोभा, मदन नित सेवत रहै।।

तहाँ संतत व्यासनन्दन, रहत कलुष विहंडना।

जय जय श्रीहरिवंश व्यास कुल मंडना।।1 ।।

जय जय श्रीहरिवंश चन्द्र उद्दित सदा।

द्विज कुल कुमुद प्रकाश विपुल सुख संपदा।।

पर उपकार विचार सुमति जग विस्तरी।

करूना-सिन्धु कृपाल काल भय सब हरी।।

हरी सब कलि काल की भय, कृपा रूप जु वपु धर्यो।

करत जे अनसहन निंदक, तिनहुँ पै अनुग्रह कौ।।

निरभिमान निर्वैर निरूपम, निष्कलंक जु सर्वदा।

जय जय श्रीहरिवंश चन्द्र उद्दित सदा।।2।।

जय जय श्रीहरिवंश प्रसंशित सब दुनी।
सारासार विवेकित कोविद बहु गुनी।।
गुप्त रीति आचरन प्रगट सब जग दिये।
ज्ञान धर्म व्रत कर्म भक्ति किंकर किये।।
भक्ति हित जे शरन आये, द्वंद दोष जु सब घटे।
कमल कर जिन अभय दीने, कर्म बंधन सब कटे।।
परम सुखद सुशील सुंदर, पाहि स्वामिनि मम धनी।
जय जय श्रीहरिवंश प्रसंशित सब दुनी।।3।।
जय जय श्रीहरिवंश नाम गुन गाइहैं।
प्रेम लक्षना भक्ति सुद्दढ़ करि पाइहैं।।
अरू बादै एसरीति प्रीति चित ना टरै।
जीति विषम संसार कीरति जग विस्तरै ।।
विस्तरै सब जग विमल कीरति, साधु संगति ना टरै।
वास वृन्दाविपिन पावै, श्रीराधिका जू कृपा करें।।
चतुर जुगल किशोर सेवक' दिन प्रसादहिं पाइहैं।
जय जय श्रीहरिवंश नाम गुन गाइ हैं।।4।।

(1)

प्रथम श्रीसेवक पद सिर नाऊँ

करहु कृपा श्रीदामोदर मोपै, श्रीहरिवंश-चरन- रति पाऊँ।।

गुन गंभीर व्यासनन्दनजू के, तुव परसाद सुजस-रस गाऊँ।

नागरीदास के तुमहि सहायक, रसिक अनन्य नृपति मन भाऊँ।।

(2)

श्रीवृंदावन सब सुखदानी। रतन-जटित वर भूमि रमानी ।

वर भूमि रमानि सुखद द्रुम बल्ली, प्रफुलित फलित विविध बरणं

नित शरद बसंत मत्त मधुकर कुल, बहु पतत्र नादहि करणं।।

नाना द्रुम कुंज मंजु बर बीथी, बन बिहार राधा रमणं ।

तहाँ संतत रहत स्याम स्यामा सँग, श्रीहरिवंश चरण शरणं॥१॥

(3)

जय, जय, जय राधिके पद सन्तत आराधिके,

साधिके, शुक, सनक, शेष, नारदादि देवी।

वृन्दावन विपुल धाम रानी नव नृपति श्याम,

अखिल लोकपालादि ललितादिक नेवी।।

लीला करि विविध भाय बरसत रस अमित चाय,

कमल प्राय गुण पराग लालन अलि खेवी।

युग वर पद कंज आस वांछत हित कृष्णदास

कुल उदार स्वामिनि मम सुन्दर गुरु-देवी।।

मंगल विलास

(4)

आज देखि ब्रजसुंदरी-मोहन बनी केलि।
अंश-अंश बाहुँ दै किशोर जोर रूप- रासि,
मनु तमाल अरु झरहि सरस कनक बेलि।।
नव-निकुंज भँवर-गुंज मंजु घोश प्रेम- पुंज,
गान करत मोर-पिकनि अपने सुर सौं मेलि।
मदन-मुदित अंग-अंग बीच-बीच सुरत-रंग,
पल-पलु हरिवंश पिवत नैंन-चषक झेलि।।

(5)

आजु सखि, अद्भुत भाँति निहारि।
प्रेम सुद्दढ़ की ग्रन्थि जु परि गई, गौर स्याम भुज चारि।।
अबहीं प्रातः पलक लागी है मुख पर श्रमकन वारि।
नागरीदास निकट रस पीवहु, अपने वचन विचारि।।

(6)

सिटपिटात किरनन के लागे।
उठि न सकत लोचन चकचौधत,ऐंचि ऐंचि ओढत बसन दोऊ जागे।।
हिय सौं हिय मुख सौं मुख मिलवत रस लम्पट सुरत रस पागे।

नागरीदास निरखि नैनन सुख मति कोऊ बोलौ जाओ जिन आगे।।

(7)

भोर भये सहचरि सब आई।

यह सुख देखत करत बधाई।।

कोऊ बीना सारंगी बजावै।

कोऊ इक राग विभासहिं गाई ।।

एक चरण हित सों सहरावै।

एक बचन परिहास सुनावें।।

उठि बैठे दोऊलाल रंगीले।

विथुरी अलक सबै अंग ढीले।।

घूमत अरुण नैन अनियारे।

भूषण बसन न जात संभारे।।

कहुँ अंजन कहुँ पीक रही फबि।

कैसे कही जात है सो छबि ।।

हार बार मिलि के उरुझाने ।

निशि के चिन्ह निरखि मुसिकाने ।

निरखि-निरखि निसि के चिन्हन रोमाचित है जाहिं।

मानौं अंकुर मैन के फिर उपजे तन माहिं।।

(8)

मंगल भोग अधिक रुचिकारी।

माखन मिश्री मोदक मेवा ,सखियन आन धरी भरि थारी।।

आलस बलित नैन झपकोहै , सोहै करतल युत सुकमारी।

पियहि निहोर मुख देत ग्रास,पुनि खात खवावत करत हहारी।।

गीत नृत्य अरु बाद करन हित, सब सखी आन भई इकठारी।

ललिता ललित देत मुख बीरी, जैश्रीकमलनयन छबि पर बलिहारी।।

(9)

मंगल भोग सहेली लाई। माखन उज्जल सिता रलाई॥

ग्रास लेत करें स्वाद बड़ाई। नेह निहोरनि बरनी न जाई॥

दही बँधैवा मिष्ट महाई। जेंवत रसना रुचि जु बढाई॥

हरि खोहा सुन्दर मधुर प्यारी लाल प्रीती सौं पाई॥

मोदक चन्द्रकला रुचि दाई। भोजन करत प्रीति अधिकाई॥

बतरस उरझनि अति मन भाई। त्रिपित भये कहि ग्रीव ढुराई ॥

जल अँचवाय जु बीरी खवाई। आनन बढ़ी अति सुन्दरताई।

सजि आरति हित रूपा लाई । वृन्दावन हित जै धुनि छाई ।।

(10)

मंगल आरती

निरखि आरती मंगल भोर । मंगल स्यामा-स्याम किसोर।

मंगल श्रीवृन्दावन धाम। मंगल कुंज महल अभिराम ।।

मंगल घंटा नाद सु होत। मंगल थार मणिनु की जोत।

मंगल दुंदुभि-धुनि छबि छाई। मंगल सहचरि दर्शन आई।।

मंगल बीन मृदंग बजावै। मंगल ताल झाँझ झर लावै ।।

मंगल सखी जूथ कर जोरैं। मंगल चँवर लियें चहुँ ओरें।।

मंगल पुष्पावलि वरषाई। मंगल जोति सकल वन छाई।।

जैश्रीरूपलाल हित हृदय प्रकाश। मंगल अद्‌भुत जुगल विलास ।।

....

प्रातहिं, मंगल आरति कीजै।

जुगलकिसोर रूप रस माते, अद्‌भुत छवि नैननि भरि लीजै।।

ललिता ललित बजावति वीना, गुन गावति सोइ जीवन जीजै ।।

जै श्रीरूपलाल हित मंगल जोरी, निरखि प्रान न्यौछावर कीजै।।

(11)

प्रात समैं दोऊ रस-लंपट ,

सुरत-जुद्ध जै-जुत अति फूल,

श्रम-वारिज धनबिंदु बदन पर,

भूषन अंगहि-अंग विकूल।।

कछु रह्यौ तिलक शिथिल अलकावलि,

बदन कमल मानौं अलि भूल ।

(जैश्री) 'हित हरिवंश' मदन-रँग रँगि रहे,

नैन बैन कटि सिथिल दुकूल।।